Vol 6 Issue 11 Dec 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal

ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

मानव शरीर पर लोक कला

नीतू खतरी[1] , डॉ. बी.एस. गुलिया[2]
[1]ललित कला विभाग ,महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक, हरियाणा ।
[2]प्रोफेसर ,ललित कला विभाग , महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक, हरियाणा ।

सार

प्रत्येक लोक कला का अपना सांस्कृतिक महत्व अवश्य रखती है। उसके साथ कई प्रकार की रूढियां और कई प्रकार के संस्कार जुडें हैं। अतः लोक अभिरूचि के उत्कृष्ट उदाहरण भित्ति चित्र एंव आंगन या दीवार को पोत कर स्वच्छता मानव मन को पवित्र कर देती है। मन पवित्र होने पर शरीर किसी, गलीज या घृणित कार्य की ओर अग्रसर नहीं हो सकता हैं।

हमारे लौकिक जीवन के सामाजिक एंव सांस्कृतिक पटल पर इस प्रकार की अनेक परम्पराएं है, जिन्हें हम छोड़ते चले जा रहे है। ये परम्पराएं बहुत अधिक है कि इनके छोड़ने से हमारी कलात्मक अभिरूचियां एवं रागात्मक प्रवृतियों अवश्य ही कुंठित होती रही है तथा लोक मानव का जीवन भी नीरस होता रहा है । कुछ इन परम्पराओं की प्राचीन, गली –सड़ी पुरानी मूल तत्व को जाने बिना उन पर कटु प्रहार करते है। सम्भवतः वे भुल जाते है कि ये परम्पराएं हमारे लोग मांगल्य का प्रतीक है । इनके नष्ट होने से हमारे सारंस्कृतिक जीवन के पुराने सूत्र ध्वस्त हो जाएगे तथा हमारे अन्दर बैठी मानवता की भावना लुप्त हो जाएगी ।

मानव शरीर पर लोक कला

हरियाणा निवासी आपने शरीर को सजाते रहें हैं। यह कहना तो बड़ा कठिन है कि शरीर को सजाने की कला हरियाणा मे कब आरम्भ हुई किन्तु इसके पीछे आत्म प्रदर्शन की भावना अवश्य है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपने को सुन्दरतम दिखाने का प्रयत्न

करता है। इसी होड़ में व्यक्ति ने अपने शरीर को सजाना आरम्भ किया होगा। धीरे धीरे यह कला विकसित हुई होगी और व्यक्ति ने उन सभी अंगों को सजाया होगा जो खुले रहते है।

शरीर की सजावट को दो भागों में बांटा जा सकता है –

(क) स्थाई अंग सज्जा

यह ऐसी शरीर सज्जा है जो शरीर पर तब तक बनी रहे जब तक शरीर स्थिर हैं अर्थात् मृत्यु तक शरीर पर बनी रहने वाली कलात्मक आकृतियां इस वर्ग में आती है। जैसे –गोदना।

(ख) अस्थाई अंग सज्जा

यह ऐसी शरीर सज्जा है जो कुछ समय या कुछ दिनों के लिए शरीर पर रह सकती है। उदाहरण के लिए मंहदी, महावर, छापा, तिलक, बिंदियां आदि।

गोदना

इसका अर्थ है चुभाना, बदन में सुई चुभाकर और सुराख में नील का पानी आदि भरकर सुन्दरता के लिए फुल सुरज, चांद, खेत गोड़ने का औजार आदि।[1]

गोदना लोक सस्कृति की प्रथम पहचान मानी जाती है क्योकि यह संसार का प्राचीनतम प्रसाधन है। इसका सम्बन्ध बहादुरी से जोड़ा जाता है तथा युद्ध में घायल होने के बाद चोट का निशान हमेशा के लिए सम्मान का प्रतीक बन जाता है। हरियाणा की प्राचीन सस्कृति का सिहावलोकन करने में यहां का पुराना साहित्य निस्सदेह स्थायी हो सकता है ।[2]

गोदना सम्बन्धित अवधारणाएं

इस सम्बन्ध में अनेक अवधारणाएं पाई जाती है। गोदना कही विजय के रूप में कही वर्ग या कुछ चिन्ह के रूप में, कही धार्मिक या सामाजिक स्तर के रूप में और अन्धविश्वास की दृष्टि से गुदवाया जाता है किन्तु प्रत्येक स्थिति में न्यूनाधिक मात्रा में अलंकरणात्मक भी होता है।[3]

हरियाणा में गोदने का प्रारम्भ

अभी तक यह निश्चित रूप से यह नही कहा जा सकता कि यह परम्परा शुद्ध भारतीय है या विदेशी, इसका प्रचलन कब और कैसे हुआ ? शोधार्थी का अनुमान है कि हरियाणा मे द्वापर युग में इसका प्रचलन हुआ होगा। अनेक पुराणें में उनके राजाओं की सतयुग त्रेता की कथाएं विद्यामान हैं, किन्तु किसी ने आपने शरीर पर गोदने गुदवाएं हो, ऐसा उल्लेख नहीं मिलता, परन्तु द्वापर में उल्लेख है कि श्री कृष्ण बलिहारी बन गए है और राधिका जी उनसे खिणवाणा चाहती है।

श्री कृष्ण बणे बलिहारी
या राधिका खिणावण हारी
मेरी कुचा पै खिण्दो मोर मुकुट
और जाघो पै खिण्दो मुरलीधर
मेरे हृदय पै खिण्दो गोपी वल्लभ
मेरे माथे पै खिणदौ चक्करधर
मेरे पलका पै खिणदेा कमल नैन
मेरे होठो पे खिणदो बंशीधर[4]

श्री कृष्ण की लीला स्थली ब्रज प्रदेश रहा है जिसकी भूमि 84 कोस बताई गई है। हरियाणा का होडल के पास के आसपास का क्षेत्र आज भी ब्रज भूमि की संज्ञा से अभिहित होता है । वैसे भी श्री कृष्ण भी हरियाणा से जुड़े रहे है। गीता का ज्ञान और कुरूक्षेत्र का महाभारत युद्ध इसके प्रमाण है। अतः इस आधार पर हरियाणा में द्वापर युग में इसका प्रचलन माना जाता है।

गोदने का वर्गीकरण

गोदने का विभिन्न आकृतियों के रूप में शरीर के विभिन्न अंगो गुदवाए जाते है। हरियाणा में पाए जाने वाले गोदने मूलतः चार प्रकार के होते है।

1 मांगलिक गोदने

इस वर्ग में वे गोदने आते है जिनका सम्बन्ध मांगल्य से है । इसमें कमल, मयूर, मत्स्य, त्रिकोण

Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

सतिया (स्वास्तिक चिन्ह) आदि आते है।

2 रक्षा यंत्रात्मक गोदने

इस वर्ग में वे गोदने आते है जिनका चक्र, तारे, पोंहची, अंगूठी आदि आते है।

3 जादूपराक गोदने

जादुई शक्ति के परिचारक चिन्ह इस वर्ग में आते है ।अतः बिच्छु, सर्प, मक्खी, मकड़ा, शंख आदि को सम्मिलित किया जा सकता है।[5]

4 पहचानपरक एवं सौन्दर्यात्मक गोदने

फूल, पत्ती, बिन्दु सूर्य चन्द्र नाम तथा समान अंगों पर समान आकृतियॉं साथ साथ बनवा लेना इसमें आती है । शरीर पर खिणी हुई कुछ विशेष आकृतियों के विशेष अर्थ भी लोग लगाते है जैसे तिल – कुदृष्टि से बचाव के लिए (चेहरे का तिल) व कमल – धन की देवी की प्रसन्नता के लिए 'चन्द्र –आनन्दमय जीवन का प्रतीक, पंच पाण्डन – भाईयों में परिवारिक सामंजस्य का प्रतीक, अंगुठी–ग्रहों के कुप्रभावो से रक्षा के लिए,मत्सय, प्रजनन शक्ति का द्योतक।'

गोदने का स्थान

प्रायः गोदने के लिए ऐसे स्थान का चयन किया जाता है जो वस्त्र पहनने के बाद भी दिखाई देता रहे परन्तु यह बहुत आवश्यक नही है। प्रायः हरियाणा में माथा, बांह का ऊपरी हिस्सा कपोल ठुड्डी, कलाई, हथेली की पीठ, अंगुलियां घुटनों के ऊपर जांघ पिण्डुलियों के ऊपर गोदने गुदवाते है।

प्रायः पढे लिखे व्यक्ति इससे कोसो दूर भागते है जबकि अनपढ या थोड़े पढ़े लिखे पुरूष और महिलाए उनकी ओर आज भी आकर्षित होते है । हरियाणा में समय समय पर लगाने वाले मेलों में नवयुवक एवं नवयुवतियॉं अपने मित्रों या सहेलियों के नाम आज भी खिणवाते हुए देखे जा सकते है ।[6] इस प्रथा में लोक कला के प्रायः सभी लोक तत्व मुखर हो उठते हैं इसलिए प्रकारन्तर से यदि इसको लोक संस्कृति का दपर्ण कह दे तेा गलत नही होगा।

गोदने का सांस्कृतिक महत्व

प्रत्येक वस्तु का अपना निजी महत्व होता है गोदना का भी इसमें महत्वपूर्ण योगदान है। यह मानव की आदिम कलात्मक सुरूचि का परिचायक है, दूसरा यह पहचानकपरक भी है और सोन्दर्य – प्रसाधन के रूप में इसका प्रयेाग देखा जा सकता है। सौन्दर्य में एक प्रकार की सरलता है जो देखते ही हमें प्रभावित करती है । गोदने के प्रकार के लिए जहां हरियाणावासियों ने इसके साथ लोक मांगल्य लोक रक्षण विस्मयता आदि को जोडा है वहां इसका विरोध भी हुआ है। प्राय कट्टर सनातनी कर्मकाण्डी ब्राहाण वर्ग ने इसका निषेध भी पुरूषों के लिए कर दिया है । उनका मत है कि गोदने वाले व्याक्ति के हाथ का जल उसके पितरों को नही मिलता । उनकी यह अवधारणा अंगहीन व्यक्ति के लिए भी है । अतः वे गोदने वाले व्यक्ति को दागयुक्त और अंगहीन की कोटि में रखते हैं ।चाहे इस सम्बन्ध में इसके साथ निषेध ही क्यों न जुड़ा गया हो, किन्तु लोक संस्कृति की रक्षा के लिए इस कला को भी मुल रूप से बचा कर रखना अनिवार्य है । जैसे पुरूष भुजाओं आदि पर लंगडिया हनुमान का चित्र गुदाते हैं और स्त्रियां भुजाओं आदि पर प्रेम की अर्भिव्यक्ति के चित्र गुदवाती हैं। आधुनिक युग में चाहें हम गोदने को महत्व न दें लेकिन कालान्तर में कोई लोक संस्कृति को अध्येकता अपने पूर्वजों की कला एवं सस्कृति को इसी के माध्यम से पहचान पाएगा, शोधार्थी का ऐसा अनुमान है।

मेहन्दी

हरियाणा की लोक कला में मेहन्दी का भी विशिष्ट सांस्कृतिक महत्व है। जहां यह सौन्दर्य बोध में सहायक है वहॉ इसे सुहाग की निशनी भी माना जाता है। विभिन्न आकृतियो, डिजायनों और नमुनो सजे हाथ देखने वाले को बरबस मोह लेते है । मेंहदी के नमूने पन्द्रह बीस दिन तक स्थाई बने रहते है । इसलिए महावर आदि के नमुनो से श्रेष्ठ गिने जाते है। गुलाल, हिगूंल, सिन्दुर, कुमकुम आदि सभी पदार्था से मेहन्दी का रंग स्थाई और पक्का होता है । इसलिए हरियाणा प्रान्त में मेहन्दी के बिना कोई विवाह लोक विधि से होना असम्भव है। मेहन्दी प्रायः सभी शुभ अवसर पर लगाई जाती है । फिर भी सगाई, विवाह, सिन्धारा, जलवा पूजन लडकी का पीहर से ससुराल जाना आदि अनेक ऐसे अवसर है । जब मेंहदी की अनिर्यता महसूस की जाती है । यह घर गृहस्थी में सुख समृद्धि देने वाली मांगलिक व अनूठी है तथा जब कभी हरियाणा की नवयुवती पानी भरने के लिए पनघट पर जाती है तो मेहन्दी अपना सौन्दर्य अलग ही दर्शाती है जिसमें सौन्दर्य का आकर्षण होता है।

मेहन्दी लगाने में बालिकाएं या औरतें जो मेहन्दी लगाने की शौकीन होती हैं । बहुत अच्छे फूल पत्ती के डिजायन हाथ व पैरों पर बनाती है ।

Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

कुछ मेहन्दी रचे हाथ या पैर तो कलाकार के लिए चूम्बक का कार्य करते है । मेहन्दी की संस्कृति साहित्य में अनेक नाम प्रचलित है रंजका रंजिनी सुगन्ध पुष्पा, रांगागी, मेंहिका, राग वर्मा, कोकदन्ता आदि । डॉ0 महेन्द्रा भानवत ने मदयन्ति, नखरजनी यवनेष्टा नखपत्रिका नाम बताते हुए कहा है कि बंगाल में यह नागदाना फारसी में एतकान, बागी जाति में मेघड तथा कही कही धसरा व फतीला आदि नामों से भी जानी जाती है।

हरियाणा प्रान्त में मेहन्दी का अपना ही महत्व है। यह हरियाणा की नारियों का प्रसिद्ध प्रसाधन है। चाहे अमीर हो या गरीब दोनो के घर में मेहन्दी समादरणीय है। विभिन्न पावन अवसरो उत्सवों पर्वों व त्योहारो पर घर की नारियॉ, बलिकाए एव बच्चे मेहन्दी लगाते एव लगवाते है।

श्रृंगार

लोक कला में मानव आकृतियां काफी मात्रा में मिलती है। जैसे गुगा पीर जी महाराज व होइ माता की आकृति जोकि गेरू से दीवार पर चित्रित की जाती है तथा इसके साथ सर्पो की आकृतियां चित्रित मिलती है। हरियाणा की लोक कला अन्य प्रचीन भारतियों कलाओं एवं सांस्कृतिक सम्प्रदाय की भांति ही पारम्परिक है। लोक कला में दो प्रकार के लोक चित्र उपलब्ध है भित्तिचित्र ओर प्रतिकृति । कंदराओ, प्रसादों एवं मंदिरों की दीवारों पर जो चित्र बनाए गए है, उनमे नारी तथा पुरूष आकृतियां काफी मात्रा में देखने के मिलती है। प्रतिकृति चित्रण एक व्यक्ति अथवा अनेक व्यक्ति की अनुकृति को कहते है। उसमें प्राकृतिक बिंब का काम करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि लोक कला की शुरूआत ही भत्ति चित्रों से होती है । सभ्यता के प्रथम प्रभात में आदि मानव ने अपनी भावाभिव्यक्ति के लिए जिस साधन अथवा फलक को चुना, वह गुफाओं की भित्तियां थी जिन पर गेरू अथवा कोयले के द्वारा चित्रों के निरूपित किया गया।[7] सांझी तथा सांझी के भाई के आकृति में नारी तथा पुरूष आकृतियों की विशेषता झलकती है।

सतांन सुखदातृ अहोई मातृका,माता पार्वती का रूप मानी जाती है ।कार्तिक कृष्ण अष्टमी के दिन होई माता का चित्र दीवार पर चित्रित किया जाता है। दीवार के किसी भाग को खड़िया मिटटी से पोत कर पवित्र किया जाता है तथा पोता हुआ तल लोक चित्र की पृष्ठभूमि काम देता हे। बुआरी की सींक पर रूई लपेट कर तुलिका बना ली जाती है तथा मिटटी की सराई या ढकने में गेरू का घोल बनाया जाता है ओर इसका मुह तथा हाथ चित्रित किए जाते है । इसके उदर भाग में पुत्र,पुत्र –वधुए,चांद,सीढी स्याऊ आदि के चित्र अंकित किए जाते है ।यदि किसी परिवार में विवाह या पुत्र जन्म हुआ है तो अहोई के दो मूख और चार हाथ बनाए जाते है।

हरियाणा में कभी कभी कर्ण 'बेधन'' पर कुछ विशिष्ट तैयारी देखने को मिलती है। इसी प्रकार गृह प्रवेश पर भी तोता बांधना, फूलझाड़ी बाधना आदि की क्रियांए सम्पन्न होती हैं । वह भी लोक कला का परिचायक है।

हरियाणा की लोक कला में औरतें साझी श्रृंगार करने की कोशिश करती है। इसलिए औरतें के सोलह श्रृंगारों का वर्णन देना यहां पर जरूरी लगता है। श्री अत्री देव के छन्द में सोहल श्रृंगार का वर्णन मिलता है।

अंग सुची मंजन बसन मांग महावर केश
तिलक माल तिल चिबुक मे भुषण मेंहदी वेश ।।
मिस्सी काजल अरगना बीरी और सुगंध ।।
पुष्प कली जुत लेप कर तब नव सप्त निम्बन्ध।।[8]
सोलह श्रृगारों को निम्न क्रम में रख गया है–

1 स्नान करना 2. तेल लगाने, 3.केश सज्जा, 4. सिर पर मुकुट धारण,5. चन्दन का लेप करना 6.विभिन प्रकार के वस्त्र धारण करना 7. ललाट पर तिलक लगाना 8. काजल डालना 9. कुण्डल पहनना 10. नथ पहनना 11. कण्ठ के आभूषण धारण करना 12. मोतियों का हार धारण करना 13. हाथो पर बुंदकियां डालना 14. गले में हार डालना 15. पैरो में आभूषण पहनना 16. पान इत्यादि खाना।

हरियाणा वैदिक संस्कृति व सभ्यता का प्रथम पालना है। यही दस प्रदेश की सरस्वती और दृषद्वती नदियों पर दस संस्कृति के प्रथम अंकुर प्रस्फूटित हुए और कालान्तर में यहां के प्रतापी जनों ने इसे पोषित करके दूर–2 तक प्रसारित किया। डा0 बुद्ध प्रकाश के अनुसार सरस्बती, घग्गर और यृषद्वती नदियों के मध्य का यह प्रदेश ब्रह्मावर्त कहलाता था तथा भारतीय संस्कृति का मध्य बिन्दु रहा है। विभिन्न वंशों तथा वर्णो के परस्पर सम्पर्क और मेलजोल ने हरियाणा के लोगों को ऐसी स्फूर्ती व जीवन शक्ति प्रदान की कि वे हृष्ट–पुष्ट कृषक, पशुपालन और शक्तिशाली यौद्धा तथा विजेता बन गए।[9]

धार्मिक व सामाजिक व सांस्कृतिक रीतियों के अन्तर्गत पिता या श्वसुर घर का मुखिया होता हैं। पगड़ी जिसे साफा, पाग या खण्डवा भी कहा जाता है, की बहुत पवित्रता मानी जाती है। गौ, कन्या तथा ब्राह्मण का विशेष आदर किया जाता है। 'हरियाणा के पारंपरिक परिधानों में तील का विशेष महत्व होता है। चुनरी और घाघरा के लिए तील एक संयुक्त सम्बोधन है। स्त्रियों को यह अत्यन्त प्रिय होता है।'[10] 'किसी को उपहार में तील देने का अर्थ है उसको अत्यन्त सम्मान देना।'[11] 'नारी का कला व साहित्य से चिरकाल से सम्बन्ध रहा है। जब हम किसी देश की किसी विशेष काल की संस्कृति को जानना चाहते हैं तो देश की उस काल से सम्बन्धित विभिन्न कलाओं का अध्ययन करते हैं।'[12]

जीवन के संस्कारों के अन्तर्गत न्हाण वार, छठी, होम, नामाकरण, विदाई, गोणा, मुँह दिखाई, कांगणा खुलाई आदि विशेष संस्कार माने जाते हैं। विशिष्ट मेलों और त्योंहारों का आयोजन भी हरियाणा की संस्कृति के साथ लोक कला के एक महत्वपूर्ण अंग है। 'डॉ0 जयभगवान गोयल के मतानुसार हरियाणा भारतीय संस्कृति का मूल केन्द्र है और परम्परानुसार इसे आदि सृष्टि का जन्म स्थान माना जाता है।'[13]

सूर्य ग्रहण मेला, सोमवती अमावस्या मेला, गुगा नौमी मेला तथा दुर्गाष्टमी के साथ–2 पशु मेला भी यहां महत्वपूर्ण माने जाते हैं। हरियाणा का होडल के आसपास का क्षेत्र आज भी ब्रजभूमि की संज्ञा से अभिहित होता है। इस प्रकार कृष्ण लीला का क्षेत्र हरियाणा भी रहा है। गोदने का प्रचलन हमें

Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

हरियाणा के जन सामान्य में दिखाई पड़ता है। 'यह सत्य है कि गोदना शरीर की स्थाई सुन्दरता का द्योतक है।[14] आधुनिक युग में चाहें गोदने को महत्व न दें लेकिन कालान्तर में कोई लोक संस्कृति को अध्येकता अपने पूर्वजों की कला एवं संस्कृति को इसी के माध्यम से पहचान पाएगा, शोधार्थी का ऐसा अनुमान है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.अग्रवाल, एस.डी.; हरियाणा : सामान्य ज्ञान; रमेश पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली; 1995
2.यादव, के0सी0; हरियाणा : ऐतिहासिक सिंहावलोकन ।
3.संगवान, गुणपाल; हरियाणावी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन ।
4.शर्मा, पूर्णचन्द; हरियाणा की लोकधर्मी नाट्य परम्परा ।
5.सिंह, विजयेन्द्र, हरियाणा के सांगों में सौन्दर्य निरूपण ।
6.'मंगल', लालचन्द्र गुप्त; हरियाणा का लोक साहित्य ।
7.यादव, के0सी0; हरियाणा : इतिहास का लोक साहित्य ।
8.शर्मा, पूर्णचन्द; हरियाणा की लोकधर्मी नाट्य परम्परा ।
9.सिंह, विजयेन्द्र; हरियाणा के सांगों में सौन्दर्य निरूपण ।
10.शारदा, साधुराम; हरियाणाः एक सांस्कृतिक अध्ययन; प्राक्कथन ।
11.सांगवान, गुणपालः हरियाणावी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन ।
12.शर्मा, पूर्णचन्द्र; हरियाणा की लोकधर्मी नाट्य परम्परा ।
13.प्रभाकर, देवीशंकर; हरियाणाः एक सांस्कृतिक अध्ययन ।
14.आचार्य, भगवानदेव; वीर भूमि हरियाणा ।
15.भान, सूरज; हरियाणा का सनत साहित्य ।
16.धनकर, रीता; हरियाणा का लोक संगीत ।
17.लाल, उषा; हरियाणा की हिन्दी कहानी ।
18.'मानव', रामनिवास; हरियाणा में रचित सृजनात्मक हिन्दी साहित्य ।
19.पूनियां, महासिंह; हरियाणा के हिन्दी प्रबन्धकाव्य ।
20.समकालिन कला, ललित कला अकादमी की पत्रिका, नवम्बर 1986 / मई 1987

---

1. सम्पादक कालिता प्रसाद वृहत हिन्दी कोष, पृ0 ज्ञान मण्डल वाराणसी, चतुर्थ संस्करण (2030) पृ0 336
2. हरियाणा संवाद, दिसम्बर 1993, पृ0 21
3. डॉ0 लल्लन राय, रीतिकालीन हिन्दी साहित्य में उल्लिखित वस्त्राभूषणों का अध्ययन, पब्लिकेशन ब्यूरो पंजाब यूनिवर्सिटी, चण्डीगढ़, प्रथम संस्करण (1974), पृ0 202
4. हरिगन्धा, नवम्बर–दिसम्बर 1989, पृ0 64
5. हरिगन्धा, नवम्बर दिसम्बर 1989 पृ0 68
6. हरिगन्धा, नवम्बर दिसम्बर 1989 पृ0 68
7. हरिगन्धा, नवम्बर दिसम्बर 1989 पृ0 9
8. श्री अत्रि देव, प्राचीन भारत के प्रसाधन– पृ0 40
9. डॉ0 बुद्ध प्रकाश– हरियाणा का इतिहास– एकसर्वेक्षण 1989 पृ0 10
10. हरियाणा संवाद, सितम्बर–1995, पृ0 32
11. वही
12. हरिगन्धा, हरियाणा अकादमी की साहित्यिक पत्रिका, नवम्बर–दिसम्बर–1992, पृ0 53
13. डॉ जयभगवान गोयल, हरियाणा की साहित्य सम्पदा, पृ01
14. हरिगंधा, नवम्बर–दिसम्बर 1989, पृ0 64

नीतू खतरी
ललित कला विभाग ,महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक, हरियाणा ।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org